गणेश पुराण

गणेश पुराण

भारतीय जीवन-धारा में जिन ग्रन्थों का महत्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण भक्ति ग्रंथों के रूप में बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। पुराण साहित्य भारतीय जीवन और साहित्य की अक्षुण्ण नि ध हैं। इनमें मानव जीवन के उत्कर्ष और अपकर्ष की अनेक गाथाएँ मलती हैं। कर्मकांड से ज्ञान की ओर आते हुए भारतीय मानस चंतन के बाद भक्ति की अ वरल धारा प्रवाहित हुई है। वकास की इसी प्र क्रया में बहुदेववाद और निर्गुण ब्रह्म की स्वरूपात्मक व्याख्या से धीरे-धीरे मानस अवतारवाद या सगुण भक्ति की ओर प्रेरित हुआ।

अठारह पुराणों में अलग -अलग देवी-देवताओं को केन्द्र मानकर पाप और पुण्य , धर्म और अधर्म , कर्म, और अकर्म की गाथाएँ कही गई हैं। आज के निरन्तर द्वन्द्व के युग में पुराणों का पठन मनुष्य को उस द्वन्द्व से मुक्ति दिलाने में एक निश्चित दिशा दे सकता है और मानवता के मूल्यों की स्थापना में एक सफल प्रयास सद्ध हो सकता है। इसी उद्देश्य को सामने रखकर पाठकों की रु च के अनुसार सरल , सहज और भाषा में पुराण साहित्य की श्रृंखला में यह पुस्तक गणेश पुराण प्रस्तुत है।

पुराण साहित्य भारतीय साहित्य और जीवन की अक्षुण्य नि ध है। इनमें मानव जीवन के उत्कर्ष और अपकर्ष की अनेक गाथाएं मलती हैं। अठारह पुराणों में अलग -अलग देवी-देवताओं को केन्द्र में रखकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म की गाथाएं कही गई हैं। इस रूप में पुराणों का पठन और आधुनिक जीवन की सीमा में मूल्यों की स्थापना आज के मनुष्य को एक निश्चित दिशा दे सकता है।

निरन्तर द्वन्द्व और निरन्तर द्वन्द्व से मुक्ति का प्रयास मनुष्य की संस्कृति का मूल आधार है। पुराण हमें आधार देते हैं। इसी उद्देश्य को लेकर पाठकों की रु च के अनुसार सरल, सहज भाषा में प्रस्तुत है पुराण-साहित्य की श्रृंखला में उप पुराण 'गणेश पुराण'।

कैसे हुई गणेश पुराण की शुरुआत?

गणेश पुराण भगवान् श्री गजानन के अनंत चरित्र को दर्शाता है। इसको सुनाने और सुनने वाले सभी का कल्याण होता है और श्री गणेश की कृपा बनी रहती है। श्री गणेश प्रथम पूज्य तो हैं ही , साथ ही वघ्नेश्वर भी कहे जाते हैं क्यों क श्री गणेश अपने भक्तों के सभी कष्ट दूर कर देते हैं। गणेश पुराण श्री गणेश जी की महिमाओं से जुड़ी बहुत सी बातें बताता है।

गणेश पुराण की उत्पत्ति के बारे में जानने से पहले महर्ष भृगु द्वारा राजा सोमकान्त को गणेश पुराण सुनाये जाने के बारे में जानना चाहिए।

राजा सोमकान्त सौराष्ट्र की राजधानी देवनगर के राजा था। वह वेदों, शस्त्र-वद्या आदि के ज्ञान से संपन्न था। उसने अपने पराक्रम के बल पर अनेक देशों पर वजय प्राप्त की थी। उसने अपनी प्रजा का पालन पुत्र की भांति कया था। उसकी पत्नी सुधर्मा पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली अति सूंदर तथा गुणवती स्त्री थी। राजा भी पत्नीव्रत धर्म का पालन करने वाला अति उत्तम पुरुष था।

जितना उत्तम राजा था उतना ही उत्तम उसका पुत्र था, जो सभी तरह की वद्याओं में निपुण और प्रजा के भले की सोचने वाला था। राजा का जीवन पूर्ण सुखी और सम्माननीय था। परन्तु युवावस्था के अंत में राजा को कुष्ठ रोग हो गया था। बहुत उपचार करवाने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ तो राजा निराश हो गया और राजपाट छोड़कर वन में जाने की ठान ली। अपने मंत्रियों से पुत्र को राज्य चलने में मदद करने को कहकर राजा ने शुभ मुहूर्त देखकर पुत्र का राज्याभषेक कया और फर वन के लए चल पड़ा। सोमकान्त के पीछे उसका पुत्र, सभी मंत्रीगण और प्रजाजन भी चल दिये। जिन्हें राजा ने राज्य की सीमा पर पहुंचकर समझाकर वापस लौटाया। पुत्र के कहने पर राजा ने **2** सेवक अपने साथ में ले लये।

वन में पहुंचकर राजा, उसकी पत्नी और सेवक एक साफ़ और समतल जगह देखकर वश्राम के लए रुके, जहाँ पर उन्हें महर्ष भृगु का पुत्र च्यवन मला। च्यवन से परिचय के पश्चात् च्यवन ने राजा के रोग की बात महर्ष भृगु से जाकर कही। महर्ष के कहने पर च्यवन राजा , उसकी पत्नी और सेवकों को आश्रम ले गया। जहाँ उन्होंने स्नानादि करके भोजन कर रात्रि वश्राम कया। अगले दिन सुबह उठकर नित्यकर्मों से निवृत होकर राजा महर्ष भृगु के सामने उपस्थित हुआ।

महर्ष भृगु ने राजा को उसके रोग का कारण उसके पूर्वजन्म के पाप बताये। जब राजा ने पूर्वजन्म के पाप के बारे में जानना की इच्छा जताई तो श्री भृगु ने उन्हें पूर्वजन्म में की गयी निर्दोषों की हत्याओं , लूटपाट आदि के बारे में बताया। महर्ष ने उन्हें यह भी बताया क कैसे जीवन के अंतिम समय में राजा

सोमकान्त ने भगवान श्री गणेश्वर के खंडहर हो चुके मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया जिसके कारण राजा को पुण्य की प्राप्ति हुई।

पूर्वजन्म में मृत्यु के बाद जब राजा को यमदूतों ने यमराज के सामने पेश कया तब यमराज के ये पूछने पर क राजा पाप और पुण्य में से कसे पहले भोगना चाहता है , राजा ने पुण्य भोगने की बात कही थी। इसी कारण इस जन्म में अब तक राजा बनकर सोमकान्त उसी पुण्य को भोग रहा था परन्तु अब पुण्य का समय ख़त्म हो गया था और पाप भोगने का समय शुरू हो चूका था इस लए सोमकान्त कुष्ठ रोग से पी ड़त हो गया था।

राजा सोमकान्त के रोग से मुक्त होने का उपाय पूछने पर मह र्ष ने उन्हें गणेश पुराण सुनने के लए कहा। परन्तु राजा ने तो कभी गणेश पुराण के बारे में कुछ भी नहीं सुना था इस लए राजा ने मह र्ष भृगु से निवेदन कया क मह र्ष से ज्यादा ज्ञानी और उत्तम कोई दूसरा व्यक्ति नहीं हो सकता जो क गणेश पुराण सुना सके, अतः स्वयं मह र्ष ही राजा को गणेश पुराण सुना दें। मह र्ष ने राजा की बात मान ली और राजा पर अ भमंत्रित जल छिड़का जिससे राजा को एक छींक आयी और उसकी नाक से एक काला और अजीब सा दिखने वाला पुरुष बहार निकला जो बड़ा होता गया और उसे देखकर सभी डर गये।

यह पुरुष पाप था और मह र्ष के द्वारा राजा पर डाले गये जल के कारण राजा के शरीर से बहार आ गया था। मह र्ष के कहने पर पाप अपनी भूख शांत करने के लए निकट स्थित एक आम के पेड़ के पास गया और जैसे ही आम खाने के लए पेड़ को छुआ तो पूरा पेड़ जलकर भस्म हो गया। इसके घटना के बाद पाप गायब हो गया। राजा को अपने रोग में आराम मल गया था। मह र्ष ने आम के पेड़ के वापस पहले जैसा न होने तक गणेश पुराण सुनाने की बात कही।

राजा के मन में प्रश्न उठा क आ खर गणेश पुराण की रचना कसने की, और उन्होंने मह र्ष से यह पूछा। मह र्ष भृगु ने तब राजा को बताना शुरू कया।

"मह र्ष वेदव्यास जी ने जब वेदों में लखी सभी बातों को चार अलग -अलग वेदों में आसान भाषा में बदल दिया तब सभी वद्वानों में उनकी बड़ी तारीफ हुई। इस बात से वेदव्यास जी को स्वयं पर गर्व हो गया। उसी गर्व के चलते अब वह पुराणों की रचना करना चाहते थे , इस लए उन्होंने पुराणों की रचना शुरू की। परन्तु अपने अ भमान के चलते उन्होंने भगवान श्री गणेश की आराधना कये बिना ही पुराणों की रचना शुरू कर दी और गणेश जी को आराधना तो हर शुभ कार्य के पहले अनिवार्य रूप से की जानी चाहिए थी क्यों क वे तो प्रथम पूज्य हैं। वेदव्यास जी से हुई इस गलती का दंड तो उन्हें मलना ही था।

पुराणों की रचना करते समय वेदव्यास जी बहुत सी महत्वपूर्ण बातों के वषय में भूलने लगे , और इससे पुराणों की रचना में वघ्न होने लगा। वेदव्यास जी काफी निराश हुए और उन्होंने भगवान ब्रह्मा जी से इसके हेतु मलना तय कया और वे ब्रह्मा जी के पास पहुंचे।

उन्होंने सारी बात ब्रह्मा जी को बताई। तब ब्रह्मा जी ने उन्हें बताया क भगवान श्री गणेश कसी को भी अ भमानी नहीं रहने देते हैं , वे तो सर्वज्ञ हैं। वेदव्यास जी को अपनी भूल का आभास हो गया था और वे इसका पश्चाताप करने का उपाय जानने के इच्छुक हुए , तब ब्रह्मा जी ने उन्हें भगवान श्री गणेश की पूजा करने के लए कहा और उन्हें पूर्ण पूजा व ध के बारे में बताया।

पूजा व ध जानने के बाद वेदव्यास जी गणेश जी के बारे में और ज्यादा जानने को उत्सुक हुए तब भगवान ब्रह्मा जी ने उन्हें श्री गणेश जी की महिमाओं के बारे में कई कथाएं कही , उन्हीं सब गणपति महिमाओं को संक लत कर मह र्ष वेदव्यास जी ने गणेश पुराण की रचना की थी।

गणेश पुराण का महत्त्व

कसी भी पूजा-अर्चना या शुभ कार्य को सम्पन्न कराने से पूर्व गणेश जी की आराधना की जाती है। यह गणेश पुराण अति पूजनीय है। इसके पठन -पाठन से सब कार्य सफल हो जाते हैं। इस खंड में ऐसी कथाएं सूत जी ने सुनाई हैं जिससे हमेशा सब जगह मंगल ही होगा। सूत जी ने सबसे पहली कथा द्वारा बताया है क कस प्रकार प्रजाओं की सृष्टि हुई और सर्वश्रेष्ठ देव भगवान् गणेश का आ वर्भाव कस प्रकार हुआ।

आगे सूत जी ने शव के अनेक रूपों का वर्णन कया है। वे कैसे सृष्टि की उत्पत्ति , संहार और पालन करते हैं। साथ ही यह भी बताया गया है क वष्णु का एक वर्ष शव के एक दिन के बराबर होता है। साथ ही सती की कथा है जिसका ववाह शवजी से हुआ।

गणेश पुराण

गणेश पुराण में पांच खंड हैं। पहला खंड आरंभ खंड है। दूसरा खंड परिचय बताता हुआ परिचय खंड है। सभी खंडों में कथाओं के माध्यम से गणेश जी की लीलाओं का वर्णन है। तीसरा खंड मां पार्वती पर आधारित खंड है। इसमें पार्वती जी के जन्म, शव ववाह की कहानी है। कार्तिकेय के जन्म की कहानी भी इसी खंड में आती है।

चौथा खंड है, युद्ध खंड। इसमें मत्सर असुर की कहानी भी है। पांचवा खंड महादेव पुण्य कथा पर आधारित खंड है। इस युग में सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग के बारे में भी कहानियां शा मल की गई हैं। कई कथाओं का वर्णन इसमें मलता है।

गणेश जी से जुड़ी नाना प्रकार की कहानियां गणेश पुराण में मलती हैं। जैसे गणेश जी के एकदंत नाम पड़ने की कहानी भी यहां दी गई है। इसमें भी कई तरह की कहानियां हैं। जैसे एक जगह कहा गया है क गणेश जी महाभारत लख रहे थे। उन्हें लखने के लए कलम की आवश्यक्ता थी और उन्होंने अपने एक दांत को कलम बनाया।

गणेश पुराण में एक कथा गजमुखासुर की भी मलती है। कथा यह है क इस राक्षस को कसी भी अस्त्र-शस्त्र से ना मारे जा सकने का वरदान था। भगवान श्री गणेश ने अपने दांत से इसका वध कया था।

पहला खंड आरंभ खंड है। इस में ऐसी कथाएं बताई गई है जिससे हमेशा सब जगह मंगल ही होगा। इसमें सबसे पहली कथा के माध्यम से बताया है क कस प्रकार प्रजा की सृष्टि हुई और सर्वश्रेष्ठ देव भगवान् गणेश का आ वर्भाव कस प्रकार हुआ। आगे इसमें शव के अनेक रूपों का वर्णन कया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है क कैसे शव सृष्टि की उत्पत्ति,संहार और पालन करते हैं।

दूसरा खण्ड परिचय खण्ड है जिसमें गणेश जन्म कथाओं का परिचय दिया गया है। इसमें अलग - अलग पुराणों के अनुसार कथा कही गई है। जैसे पद्म व लंग पुराण के अनुसार। और अंत में गणेश की उत्पत्ति की स वस्तार से उत्पत्ति की कथा है।

तीसरा खण्ड माता पार्वती खण्ड है। इसमें पार्वती के पर्वतराज हिमालय के घर जन्म की कथा है और शव से ववाह की कथा। आगे कार्तिकेय के जन्म की कथा है जिसमें तारकासुर के अत्याचार से लेकर कार्तिकेय के जन्म की कथा है। इस खण्ड में व शष्ठ जी द्वारा सुनाई अरण्यराज की कथा है।

चौथा खण्ड युद्ध खण्ड : नाम खण्ड है। इसमें आरम्भ में मत्सर नामक असुर के जन्म की कथा है जिसने दैत्य गुरु शुक्राचार्य से शव पंचाक्षरी मन्त्र की दीक्षा ली। आगे तारक नामक असुर की कथा है। उसने ब्रह्मा की अराधना कर त्रैलोक्य का स्वा मत्व प्राप्त कया। साथ में इसमें महोदर व महासुर के आपसी युद्ध की कथा है। लोभासुर व गजानन की कथा भी है जिसमें लोभासुर ने गजानन के मूल महत्त्व को समझा और उनके चरणों की वंदना करने लगा। इसी तरह आगे क्रोधासुर व लम्बोदर की कथा है। आगे फर कामासुर, वघ्नराज, धूम्रवर्ण की कथा कही गई है।

पांचवा खण्ड महादेव पुण्य कथा खण्ड है। इसमें सूत जी ने ऋ षयों को कहा , आप कृपा करके गणेश, पार्वती के युगों का परिचय दीजिए। तब आगे इस खण्ड में सत्तयुग, त्रेतायुग व द्वापर युग के बारे में बताया है। जन्मासुर, तारकासुर की कथा से इसका अन्त हुआ है।

कुल 18 पुराण हैं, वेदव्यास हैं इनके रचयिता

अक्सर लोगों के दिल में सवाल उठता है, देवी देवताओं की कहानियां आती कहां से हैं? जो हर व्रत त्यौहार को एक कथा की जाती है वो सबसे पहले कसने कसको सुनाई होगी ? अगर आपके मन में भी ऐसे ही सवाल उठते हैं, तो आपको पुराण पढ़ने चाहिए। बहुत से लोगों ने सर्फ गरुड़ पुराण के बारे में ही सुना होता है, वो भी जब कसी रिश्तेदार के घर कसी का शोक मनाने जाते हैं और वहां पं डत जी गरुड़ पुराण पढ़ते नजर आते हैं।

दरअसल कुल **18** पुराण हैं। महर्षि वेदव्यास को इन पुराणों की रचना का श्रेय दिया जाता है। **18** पुराणों में देवी देवताओं को आदर्श मानते हुए उनसे जुड़ी बातें सविस्तार बताई गई, ताकि सुनने वाले पाप-पुण्य का फेर समझ सकें। इन्हीं सब में से एक है गणेश पुराण।

संक्षिप्त कथा

बहुत प्राचीन समय की बात है कि एक बार नैमिषारण्य में कथाकार सूतजी पधारे। उन्हें आया देखकर वहां रहने वाले ऋषि मुनियों ने उनका अभिवादन किया। अभिवादन के बाद सभी ऋषि- मुनि अपने-अपने आसन पर बैठ गए तब उन्हीं में से किसी एक ने सूतजी से कहा -"हे सूत जी ! आप लोक और लोकोत्तर के ज्ञान-ध्यान से परिपूर्ण कथा वाचन में सिद्धहस्त हैं। हमारा आप से निवेदन है कि आप हमें हमारा मंगल करने वाली कथाएँ सुनायें।" ऋषि -मुनियों से आदर पाकर सूतजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा-"आपने जो मुझे आदर दिया है वह सराहनीय है। मैं यहां आप लोगों को परम कल्याणकारी कथा सुनाऊंगा।" सूतजी ने कहा-"ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ब्रह्म के तीन रूप हैं। मैं स्वयं उनकी शरण में रहता हूं। यद्यपि विष्णु संसार पालक हैं और वह ब्रह्मा की उत्पन्न की गयी सृष्टि का पालन करते हैं। ब्रह्मा ने ही सुर-असुर, प्रजापति तथा अन्य यौनिज और अयौनिज सृष्टि की रचना की है।

रुद्र अपने सम्पूर्ण कल्याणकारी कृत्य से सृष्टि के परिवर्तन का आधार प्रस्तुत करते हैं। पहले तो मैं तुम्हें बताऊंगा क कस प्रकार प्रजाओं की सृष्टि हुई और फर उनमें सर्वश्रेष्ठ देव भगवान गणेश का आ वर्भाव कैसे हुआ। भगवान ब्रह्मा ने जब सबसे पहले सृष्टि की रचना की तो उनकी प्रजा नियमानुसार पथ में प्रवृत्ति नहीं हुई। वह सब अ लप्त रह गए। इस कारण ब्रह्मा ने सबसे पहले तामसी सृष्टि की, फर राजसी। फर भी इच्छित फल प्राप्त नहीं हुआ। जब रजोगुण ने तमोगुण को ढक लया तो उससे एक मथुन की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा के चरण से अधर्म और शोक से इन्सान ने जन्म लया। ब्रह्मा ने उस म लन देह को दो भागों में वभक्त कर दिया।

एक पुरुष और एक स्त्री। स्त्री का नाम शतरूपा हुआ। उसने स्वयंभू मनु का पति के रूप में वरण कया और उसके साथ रमण करने लगी। रमण करने के कारण ही उसका नाम रति हुआ। फर ब्रह्मा ने वराट का सृजन कया। तब वराट से वैराज मनु की उत्पत्ति हुई। फर वैराज मनु और सतरूपा से प्रयव्रत और उत्तानुपात दो पुत्र उत्पन्न हुए और आपूति तथा प्रसूति नाम की दो पुत्रियां हुईं। इन्हीं दो पुत्रियों से सारी प्रजा उत्पन्न हुई। मनु ने प्रसूति को दक्ष के हाथ में सौंप दिया। जो प्राण है , वह दक्ष है और जो संकल्प है, वह मनु है।

मनु ने रु च प्रजापति को आपूति नाम की कन्या भेंट की। फर इनसे यज्ञ और द क्षणा नाम की सन्तान हुई। द क्षणा से बारह पुत्र हुए , जिन्हें याम कहा गया। इनमें श्रद्धा , लक्ष्मी आदि मुख्य हैं। इनसे फर यह वश्व आगे वकास को प्राप्त हुआ। अधर्म को हिंसा के गर्भ से निर्कति उत्पन्न हुई और अन्निद्ध नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। फर इसके बाद यह वंश क्रम बढ़ता गया। कुछ समय बाद नीलरोहित , निरुप, प्रजाओं की उत्पत्ति हुई और उन्हें रुद्र नाम से प्रतिष्ठित कया गया। रुद्र ने पहले ही बता दिया था क यह सब शतरुद्र नाम से वख्यात होंगे।

यह सुनकर ब्रह्माजी प्रसन्न हुए और फर इसके बाद उन्होंने पृथ्वी पर मैथुनी सृष्टि का प्रारम्भ करके शेष प्रजा की सृष्टि बन्द कर दी। सूतजी की बातें सुनकर ऋ ष -मुनियों ने कहा , "आपने हमें जो बताया है उससे हमें बड़ी प्रसन्नता हुई है। आप कृपा करके हमें हमारे पूजनीय देव के वषय में बताइये।

जो देवता हमें पूज्य हो और उसकी कृपा से हमारे और आगे आने वाली प्रजाओं के कल्याणकारी कार्य सम्पन्न हों।" ऋ षयों की बात सुनकर सूतजी ने कहा क ऐसा देव तो केवल एक ही है और वह है महादेव और पार्वती के पुत्र श्री गणेश।

पुराणों में गणेश वर्णन

पुराणों में गणपति की उत्पत्ति और उनके व वध गुणों का आश्चर्यजनक रूपकों में अतिरंजित वर्णन है- अ धकांश कथाएँ ब्रहमवैवर्त पुराण में पाई जाती हैं। गणेश को कहीं केवल पार्वती का ही पुत्र माना गया है।

पुराणों में रूद्र के मरूत आदि असंख्य गण प्र सद्ध हैं। इनके नायक अथवा पतिको वनायक या गणपति कहते हैं। समस्त देवमण्डल के नायक भी गणपति ही हैं। डा **0** सम्पूर्णानन्द ने अपने ग्रन्थों गणेश तथा हिन्दू देवपरिवार का वकास मेंगणेश को आयोत्तर देवता माना है जिसका प्रवेश और आदर हिन्दू देवमण्डल में हो गया।अ धकांशतः कहना है क हिन्दू लघु देव मण्डल, अर्थ देवयोनि तथा भूत- पशाच परिवार मेंबहुत से आर्योत्तर तत्व मलते हैं।

"गणेश नामक ग्रन्थ की वदुषी ले खका ए लस गे ी ने गणेश को द्र वड़ों का स्वतन्त्र स्थानीय देवता कहा है। उस समय न उनकी कोई सुनि र्मत प्रतिमा थी न कोई नाम और न देवालय। वे कसी घने वृक्ष के नीचे या पत्थर के चौरे पर अनगढ शलाखण्ड के रूप में आदिम गरिजनों के ग्राम देवता रहे हैं।

इस पूजा शला को युद्ध प्रयाण से पहले ग्रामवासी योद्धा रू धर से अ भ षक्त करते थे। गणेश का सन्दूरा भषेक उसी आदिम परम्परा का नया रूप है।

गणेश की उत्पत्ति से सम्बन्धित वृतान्त स्कन्द, मत्स्य पुराण एवं सुप्रभेदागम में मलते हैं। उनका सर्वप्रथम उल्लेख एत्रेय ब्राहमाण में आया है जहाँ उन्हें ब्रहमा , ब्रहमणस्पति या बृहस्पति से पहचाना गया है।

मत्स्य पुराण में ही **(180/66)** में एक जगह कहा गया है क महायक्ष कुबेर ने भी वाराणसी में अपना स्वभाव छोड़ दिया और गणेशत्व पद को प्राप्त हो गये। मत्स्य पुराण के अनुसार ही शंकर से परिणीत होने के उपरान्त पार्वती को पुत्र पाने की , बल इच्छा हुई। उन्होंने एक गजाकृति पुतले को पुत्रवत पालना आरम्भ कर दिया। एक दिन गंगा में इस पुतले को स्नान कराया। उसके बाद वह लम्बा सजीव शरीर वाला हो गया। इसी कारण वे गजानन और गांगेय कहलाते हैं।

वराह-पुराण के अनुसार गणेश की उत्पत्ति वध्न वनाशक के रूप में हुई। भगवान गणेश वेद वहित कर्मों के प्रथम पूज्य देव हैं। एक समय देवता तथा ऋ षगणों के प वत्र कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न होने लगी। तो वे शंकर के पास पहुँचे। वहाँ भगवान रूद्र हँस पड़े तो उनके मुख से एक बालक प्रकट हुआ। उस बालक को पार्वती लगातार देखने लगी तो भगवान भोलेनाथ ने श्राप दिया क कुमार तुम्हारा मुख हाथी जैसा व पेट लम्बा होगा तथा ,सर्प तुम्हारे यज्ञोपवीत होंगे। क्रो धत शंकर का इस पर भी क्रोध शान्त नहीं हुआ तो उनके शरीर से अनेक वनायक गण उत्पन्न हुये, बाद में ब्रह्मा की प्रार्थना पर इन गणों का कुमार को स्वामी बना दिया और ये वनायक गणपति हो गये।

गणपति का दूसरा नाम वनायक– भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी होने के कारण यह ति थ गणेश चतुर्थी के नाम से प्र सद्ध हुई। समस्त देवताओं में गणेशजी सर्वप्रथम पूजे जाते हैं , कारण वे गणनायक , वध्न वनायक, संकटहारी और स द्ध समृ द्ध के दाता हैं। वद्या , बु द्ध, धन, वैभव, शक्ति, तेज अध्यात्म साधना और तन्त्र स द्ध के लये भक्त जन गणेशजी की शरण लेते हैं। गणेश जी की पूजा साधना के अनेक मन्त्र हैं व ब्रह्द्ध सम्प्रदाय गणेश साधकों के लये हैं। समस्त हिन्दू जाति गणेशजी का सबसे पहले नमन करती है। गणपति गण अथवा समुदायों के नायक हैं। गणपति का दूसरा नाम वनायक भी है। जो वचारने वाली आत्माओं के लये प्रयुक्त होता है। अथर्व शरस उपनिषद् में रूद्र के अनेक देवों या आत्माओं का समीकरण करते हुये वनायक का भी नाम आता है।

"महाभारत में गणेश्वरों और वनायकों का देवताओं के साथ उल्लेख हुआ है। जो मनुष्य कार्य का सर्वत्र अवलोकन करते हैं। करात प्रजाति **(**भोट-भ्रन्मा**)** के अनेक गण **(**जनजातियाँ**)** उस समय उत्तरी भारत

में रह रही थीं — यक्ष गन्धर्व, कन्नर, गुहक, कं पुरूष, भोट पशाच आदि। यक्षों के अ धक प्रबल होने पर इन गणों ने भी कुबेर को अपना गणपति या गणेश मान लया और उसकी पूजा करनी आरम्भ कर दी। महाभारत में कुबेर को कुछ स्थानों पर गणेश कहा गया है।

लंग पुराण में गणेश को वध्नेश्वर कहा गया है। लंग पुराण के अनुसार देवों ने भगवान शव से अनुरोध कया क आप कसी एक ऐसी शक्ति का प्रादुर्भाव करें जो क सभी प्रकार के वध्नों का निवारण कया करें। देवों की इस प्रार्थना के अनुसार भगवान शव ने स्वयं ही □गणेश□ के रूप में जन्म ग्रहण कया।

वायु पुराण में भगवान शव को □गजेन्द्रकर्ण□, लम्बोदर, "दृष्ट्रिन□ (वा) पुणे **24/147, 30/173)** आदि कहकर इसी तथ्य की पुष्टि की गयी है।

ब्रह्मपुराण में गणेश जी का भगवान शव के लये उपयोग करके दोनों में पूर्व अ भन्नता का प्रतिपादन कया गया है। □ब्रह्मवैवर्त पुराण□ में गणेश को कृष्ण का अवतार कहा गया है। □ब्रह्मवैवर्त पुराण□ के ही मतानुसार गणेश जी का वष्णु के साथ तादाम्य है।भगवान वष्णु शवजी से कहते हैं क पार्वती जी से एक पुत्र होगा जो समस्त वध्नों का नाश करेगा। इतना कहकर भगवान वष्णु बालक का रूप धारण करके शव के आश्रम में गये वे पार्वती जी की शैय्या पर बालक रूप में लेट गये। पार्वती जी ने उन्हें अपना पुत्र माना यही पुत्र □गणेश जी□ के नाम से लोक वश्रत हुआ।

सौर पुराण में गणेश जी को साक्षात् शव ही कहकर यह सद्ध करने की चेष्टा की गयी है क श्री गणेश एवं भगवान .. शव दोनों एक ही हैं। गणेश सम्प्रदाय एवं गणेश पुराण में भगवान गणपति को □महा वष्णु□ एवं □सदा शव□ कहा गया है और उन्हें साक्षात् ब्रह्म माना गया है वे ही प्रपच्च की सृष्टि और स्थिति संहार आदि के कारण ही उन्हीं से ब्रह्मा, वष्णु, महेश का प्रादुर्भाव हुआ है।

शव पुराण के अनुसार पार्वती जी ने अपने शरीर के अनुलेप से एक मानवाकृति नि र्मत की और उसे आज्ञापति कया क मैं स्नान करने जा रही हूँ जब तक न कहूँ तक तक तुम कसी को अन्दर मत आने देना। यही गृहद्वार रक्षक शक्ति □गणेश□ के नाम सेअ भहित हुई और इन्हीं के साथ भगवान शंकर

का संग्राम हुआ।' गणपति अथर्वशीर्ष एक नव्य उपनिषद् हैं और अथर्ववेद से सम्बन्धित हैं। इस उपनिषद् में गणेश वद्या बतलायी गयी है। इसी कारण गणेशोपासकों में वह अत्यन्त सम्मानित है। गणपति अथर्वशीर्ष में गणेशजी का सगुण ब्रह्मात्मक वर्णन तो है ही बल्कि उसके अन्त में उन्हें परब्रह्म भी कहा गया है। अथर्व शरस उपनिषद् में रूद्र का अ भज्ञान अनेक देवताओं से कया गया है , जिनमें एक वनायक कहे गये हैं।

ब्रह्म वैवर्त पुराण , स्कन्द पुराण तथा शव पुराण के अनुसार प्रजापति वश्वकर्मा की रिद्धी - स द्ध नामक दो कन्याएं गणेश जी की पत्नियां हैं। स द्ध से शुभ और रिद्धी से लाभ नाम के दो कल्याणकारी पुत्र हुए।

पद्म पुराण के अनुसार एक बार श्री पार्वती जी ने अपने शरीर के उबटन से एक आकर्षक कृति बनाई, जिसका मुख हाथी के समान था। फर उस आकृति को उन्होंने गंगा में डाल दिया। गंगाजी में पड़ते ही वह आकृति वशालकाय हो गई। पार्वती जी ने उसे पुत्र कहकर पुकारा। देव समुदाय ने उन्हें गांगेय कहकर सम्मान दिया और ब्रह्मा जी ने उन्हें गणों का आ धपत्य प्रदान करके गणेश नाम दिया।

अग्नि पुराण में भी गणेश जन्म एवं गणेश गौरव की गाथायें हैं , स्मार्त परम्परा में गणपति वनायक के आवेभव में वघ्नेश्वर की जो कल्पना है उसका समर्थन लंग पुराण भी करता है। असुर और राक्षस तपस्या कर शव को प्रसन्न कर लेते थे, और व भन्न वरदान माँग लेते थे। इस पर इन्द्रादि देवों ने शव से प्रार्थना की क यह तो ठीक नहीं क्यों क वरदानों से सम्पन्न ये असुर और राक्षस देवों से युद्ध करते और उन्हें परास्त भी कर देते।

देवों ने भगवान से ऐसे व्यक्ति को उत्पन्न करने की प्रार्थना की जो उन असुरों के इन धा र्मक कार्यों में बाधा डाल सके और वे सफल मनोरथ न हो सके। शव ने देवों की प्रार्थना स्वीकार कर ली और वध्नेश्वर को उत्पन्न कर उसको असुरों की **2 ,3** यादि यागदिक क्रयाओं में वघ्न डालने के लये नियुक्त कया।

भ वष्य पुराण में कथा आती है क यु धष्ठिर को कृष्ण ने महाभारत युद्ध में वजय प्राप्त करने के लए गणेश पूजन का परामर्श दिया था बाद में गणेश प्रतिमा को संदूरा भ षक्त कया जाने लगा। आज भी गणेश को अ र्पत कये जाने वाले रक्त चंदन के लेप , लाल वस्त्र और रक्त पुष्पों की अंज ल गणेश के पा र्थव (भौम) देवता होने को सद्ध करती है।

भौम मंगलगृह का नाम है और उसका रंग भी लाल माना गया है। पुराणकार मंगलगृह की उत्पत्ति भी पृथ्वी पर गरे उमा के ऋतुकालीन रक्त बिन्दु से मानते हैं इसी कारण वनायक को मंगलरूप भी कहा जाता है।।

गणेश पुराण और मुग्दल पुराण में गणेश पूजा का वस्तृत वर्णन है। ये पुराण उपपुराण है। इसके पांच खंड हैं।

गणेश पुराण में गणेश को ही परमब्रह्म कहा गया है। भगवान् गणेश का आ वर्भाव कस प्रकार हुआ उसका पूरा वर्णन इस पुराण में है। भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश चतुर्थी का उत्सव पूरे देश में मनाया जाता है। गणेश पुराण के अनुसार, इसी शुभ दिन भगवान गणेश का जन्म हुआ था।

गणेश पुराण में गणेश के निर्गण स्वरूप के साथ ही उनके सगुण साकार स्वरूप का वर्णन है , जो पूर्व मध्यकालीन गणपति प्रतिमाओं के वकास की अवस्था को प्रकट करता है। इस पुराण में गणेश का वक सत व वध व बहुआयामी स्वरूप व्याख्यायित है। यह व वधता मुद्राओं , अलंकारों, आयुधों, वाहनों, स्वरूपों सभी में परिल क्षत होती है।

गणेश पुराण में गणेश का अत्यन्त मनोरम व भव्य स्वरूप इस प्रकार व र्णत है – वनायक की रत्नकांचन से युक्त महामूर्ति बनाकर, जिसमें उनके चतुर्भुज व त्रिनेती स्वरूप का अंकन हो, तथा जो नाना अलंकारों से शोभायमान हो, षोडशोपचार वधान के साथ पूजा करनी चाहिये।

पुराणकाल तक आते-आते। गणेश की उपासना इतनी व्याप्त हो चुकी थी क प्रायः सभी पुराणों में गणेशोपासना का उल्लेख कया गया है। गणेश पुराण में व र्णत है-

वर्णानार्थसंघानां रसानां छंदसाम प।

मंगला नाञ्च कर्तारौ वंदे वाणी वनायकौ।।

अर्थात् वर्ण, अर्थसंघ, रस, छंद और मंगल के वधायक वाणी और वनायक को मैं वंदन करता हूँ। यहाँ प्रसंगतः गणपति के नाम में स्थित □गण□ और तुलसीकृत वंदना का वचार शब्द शास्त्र की दृष्टि से कया जाय तो □गणपति□ की एक नई सूक्ष्म व्याख्या उभरती है।

भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म के प्रतीक देवों में भगवान गणेश का प्रमुख स्थान हैं– एकदंत , गजानन, लंबोदर, गणपति, वनायक ऐसे सहस्र नामों से भगवान गणेश को पुकारा गया है। हिंदू धर्म में श्रीगणेश की महिमा को अन्य देवताओं की तुलना में अलग से स्वीकारा गया हैं। वेदों और पुराणों में गणेश को यश, कीर्ति, पराक्रम, वैभव, ऐश्वर्य, सौभाग्य, सफलता, धन, धान्य, बु द्ध, ववेक और ज्ञान के देवता बताया गया है। अनेक शास्त्रों में उनके अलग -अलग रुपों की चर्चा हुई है। भगवान गणेश का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ था।

गणेश पुराण

गणेश पुराण में पांच खंड हैं। पहला खंड आरंभ खंड है। दूसरा खंड परिचय बताता हुआ परिचय खंड है। सभी खंडों में कथाओं के माध्यम से गणेश जी की लीलाओं का वर्णन है। तीसरा खंड मां पार्वती पर आधारित खंड है। इसमें पार्वती जी के जन्म , शव ववाह की कहानी है। कार्तिकेय के जन्म की कहानी भी इसी खंड में आती है।

चौथा खंड है , युद्ध खंड। इसमें मत्सर असुर की कहानी भी है। पांचवा खंड महादेव पुण्य कथा पर आधारित खंड है। इस युग में सतयुग , त्रेतायुग, द्वापर युग के बारे में भी कहानियां शा मल की गई हैं। कई कथाओं का वर्णन इसमें मलता है।

गणेश जी से जुड़ी नाना प्रकार की कहानियां गणेश पुराण में मलती हैं। जैसे गणेश जी के एकदंत नाम पड़ने की कहानी भी यहां दी गईं है। इसमें भी कई तरह की कहानियां हैं। जैसे एक जगह कहा गया है क गणेश जी महाभारत लख रहे थे। उन्हें लखने के लए कलम की आवश्यक्ता थी और उन्होंने अपने एक दांत को कलम बनाया।

गणेश पुराण में एक कथा गजमुखासुर की भी मलती है। कथा यह है क इस राक्षस को कसी भी अस्त्र-शस्त्र से ना मारे जा सकने का वरदान था। भगवान श्री गणेश ने अपने दांत से इसका वध कया था।

वक्रतुंड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
नि र्वघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
ऊँ गं गणपतये नमो नमः ऊँ गं गणपतये नमो नमः ऊँ गं गणपतये नमो नमः

अर्थात्- आपका एक दांत टूटा हुआ है तथा आप की काया वशाल है और आपकी आभा करोड़ सूर्यों के समान है। मेरे कार्यों में आने वाली बाधाओं को सर्वदा दूर करें।

गणनां त्वां गणपति हवामहे क वं कवीनामुपं श्रवस्तम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत्आनशृण्वं नूति भ: सीडू नादनम्।।

अर्थात्- हे गणपति, तू वद्वानों का वद्वान है, ब्रह्म से भी ज्येष्ठ है। इस नई रचना को सुन।

वैसे अनादिकाल से ही वैदिक एवं पौरा णक मन्त्रों द्वारा गणपति की पूजा चली आ रही है। वेदों में गणपति 'ब्रह्मणस्पति' भी कहलाते हैं। ब्रह्मणस्पति के रूप में वे ही सर्वज्ञाननि ध तथा समस्त वाङ्मय के अ धष्ठाता हैं। आचार्य सायण से भी प्राचीन वेदभाष्यकार श्री स्कन्दस्वामी अपने ऋग्वेदभाष्य के प्रारम्भ में लखते हैं-

वघ्नेश व धमार्तण्डचन्द्रेन्द्रोपेन्द्रवन्दित।
नमो गणपते तुभ्यं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पते॥

अर्थात्- ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र, इन्द्र तथा वष्णु के द्वारा वन्दित है। वघ्नेश गणपति! मन्त्रों के स्वामी ब्रह्मणस्पति! आपको नमस्कार है।

अनेक शास्त्रों में भगवान गणेश के अलग -अलग रुपों की चर्चा हुई है। पर ब्रह्म गणेश्वर का वशद ववेचन "गणेश-पुराण" में व र्णत है। "पुराण वाङ्मय" में इसका महत्वपूर्ण स्थान हैं। गणेश पुराण के अनुसार गणेश प्रणव रूप में अवस्थित हैं। स्वंय ब्रह्मा, वष्णु और शव उनकी पूजा करते हैं।

लंग पुराण में भगवान गणेश को वध्नेश्वर कहा गया है। उनकी कृपादृष्टि मात्र से वघ्नों के पर्वत भी धराशायी हो जाते हैं, इसी लए अनादि काल से कसी भी कार्यारंभ में देवों एवं मानवों के द्वारा उनकी सर्वप्रथम पूजा की जाती है। वद्वानों और पुराणकारों के मत में गणेशजी ही परात्पर ब्रह्म एवं जगदरूप हैं।

सगुणोपासना में जिस प्रकार निराकार ब्रह्म अनेक रूपों में अवतरित हुए है। उसी प्रकार उनका एक रूप गजानन का भी है। गणपति गणेश के रूप में वे पार्वती एवं शव पुत्र है ,समस्त देवों द्वारा उन्हें अग्रगण्य पद पर प्रतिष्ठित कया गया है। वेदों , पुराणों, उपनिषदों एवं समस्त ग्रन्थों में गणेश की महिमा व र्णत की गई है। हमारे सनातन हिन्दू धर्म के समस्त कार्यों के आरम्भ में श्री गणेश जी के स्मरण , नमनस्तवन और पूजन आदि का वधान है। इस लये कसी भी कार्य का शुभारम्भ (श्री गणेश) के नामोच्चार से कया जाता हैं। यही नहीं कार्य के आरम्भ के लए लोक में श्री गणेश यह पर्याय हो चुका हैं।

आदौं पूज्यों वनायकः।

यह उक्ति गणेश की अग्र पूजा का प्रबल परिचायक है।

गणपत्यर्थवशीर्षोपनिषद् के अनुसार तो गणेश को ही सर्वदेवमय व र्णत करते हुए कहा गया है क-

त्वं ब्रह्म त्वं वष्णुस्त्क्रूद्रस्त्व मंद्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यः त्वं चन्द्रमा त्वं ब्रह्म भूर्भुः स्वरोम्"।

अर्थात् आप ही ब्रह्मा, वष्णु, शव, इन्द्र, अग्नि, वायु, सूर्य चन्द्र हो। आप ही स्वयं ब्रह्म, भू, भुवः स्वः एवं प्रणव हो।

वास्तव में श्री गणेश, ब्रह्मा, वष्णु, शव इत्यादि देवों में कोई भेद नहीं है , क्यों क गणेश शब्द की व्युत्पत्ति-

“गणानां जींकजातानाम् ईशः

अर्थात् प्रा णमात्र के स्वामीही गणेश हैं, सृष्टि के आरम्भ में आसुरी शक्तियों द्वारा जो वघ्न-बाधाएँ उत्पन्न कीजाती हैं, उनके निवारण के लए स्वयं गणपति रूप बनाकर ब्रह्मा जी के सृष्टि कार्य में सहायक होते हैं।

ऋग्वेद एवं यजुर्वेद में जो “गणानां त्वा -” इत्यादि मन्त्रों में गणपति कासुस्पष्ट उल्लेख है , वहीं, ब्रह्मा, वष्णु आदि गणों के अ धपति गणनायक ही परमात्मा कहे गये हैं।

“गणपति” शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में हुआ - अनादिकाल से ही धर्मप्राण जनता वैदिक एवं पौरा णक मन्त्रों द्वारा गणपति की पूजा चली आ रही है।’ गणपति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में हुआ है। ऋग्वेद के मन्त्रों में स्पष्ट रूप से ब्रह्मणस्पति को सम्बो धत कया गया है अतएव प्रथमपंक्ति का गणपति शब्द उन्हीं के लए प्रयुक्त हुआ है। ब्रह्मणस्पति का अर्थ है – ब्रह्मों कापति।।

गणानां पतिगणपतिः

सर्वजगन्नियन्ता पूर्ण परमतत्व ही “गणपति” तत्व है।

समूहान्य वाचक परिकीर्तिनः

समूहों का पालन करने वाले परमात्मा को ‘गणपति’ कहते हैं... देवादिकों के पतिको भी गणपति कहते हैं

महत्व गणनां पतिः गणपतिः

अथवा

निगुर्ण सगुण ब्रह्मागणाना पतिः गणपति।

सर्व वध गणों को सत्ता देने वाला जो परमात्मा है वही गणपति है।

श्री गणेश भी भगवान का ही एक व शष्ट स्वरूप है वे पार्वती शव के पुत्र के रूप में प्रकट हुये। इनकी उपासना कई प्रकार की है। इनके रूप भी अनेक है रूप के अनुसार नाम भी भन्न - भन्न हैं, जैसे- महागणपति, चन्ताम ण गणपति, हरिद्रागणपति इत्यादि।

आरम्भ खण्ड

बहुत प्राचीन समय की बात है क एक बार नै मषारण्य में कथाकार सूतजी पधारे। उन्हें आया देखकर वहां रहने वाले ऋ ष मुनियों ने उनका अ भवादन कया। अ भवादन के बाद सभी ऋ ष -मुनि अपने-अपने आसन पर बैठ गए तब उन्हीं में से कसी एक ने सूतजी से कहा -"हे सूत जी ! आप लोक और लोकोत्तर के ज्ञान-ध्यान से परिपूर्ण कथा वाचन में सद्धहस्त हैं। हमारा आप से निवेदन है क आप हमें हमारा मंगल करने वाली कथाएँ सुनायें।"

ऋ ष-मुनियों से आदर पाकर सूतजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा -"आपने जो मुझे आदर दिया है वह सराहनीय है। मैं यहां आप लोगों को परम कल्याणकारी कथा सुनाऊंगा।"

सूतजी की बात सुनकर ऋ ष बोले-"आप हमें कौन-सी कथा सुनायेंगे **?"**

यह सुनकर सूतजी ने कहा -"बह्मा, वष्णु, महेश, ब्रह्म के तीन रूप हैं। मैं स्वयं उनकी शरण में रहता हूं। यद्य प वष्णु संसार पालक हैं और वह ब्रह्मा की उत्पन्न की गयी सृष्टि का पालन करते हैं। ब्रह्मा ने ही सुर -असुर, प्रजापति तथा अन्य यौनिज और अयौनिज सृष्टि की रचना की है। रुद्र अपने सम्पूर्ण कल्याणकारी कृत्य से सृष्टि के परिवर्तन का आधार प्रस्तुत करते हैं। पहले तो मैं तुम्हें बताऊंगा क कस प्रकार प्रजाओं की सृष्टि हुई और फर उनमें सर्वश्रेष्ठ देव भगवान् गणेश का आ वर्भाव कैसे हुआ।

भगवान् ब्रह्मा ने जब सबसे पहले सृष्टि की रचना की तो उनकी प्रजा नियमानुसार पथ में प्रवृत्ति नहीं हुई। वह सब अ लप्त रह गए। इस कारण ब्रह्मा ने सबसे पहले तामसी सृष्टि की , फर राजसी। फर भी इच्छित फल प्राप्त नहीं हुआ।

जब रजोगुण ने तमोगुण को ढक लया तो उससे एक मथुन की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा के चरण से अधर्म और शोक से इन्सान ने जन्म लया। ब्रह्मा ने उस म लन देह को दो भागों में वभक्त कर दिया। एक पुरुष और एक स्त्री। स्त्री का नाम सतरूपा हुआ। उसने स्वयंभू मनु का पति के रूप में वरण कया और उसके साथ रमण करने लगी।

रमण करने के कारण ही उसका नाम रति हुआ। फर ब्रह्मा ने वराट का सृजन कया। तब वराट से वैराज मनु की उत्पत्ति हुई। फर वैराज मनु और सतरूपा से प्रयव्रत और उत्तानुपात दो पुत्र उत्पन्न हुए और आपूति तथा प्रसूति नाम की दो पुत्रियां हुईं।

इन्हीं दो पुत्रियों से सारी प्रजा उत्पन्न हुई। मनु ने प्रसूति को दक्ष के हाथ में सौंप दिया। जो प्राण है, वह दक्ष है और जो संकल्प है , वह मनु है। मनु ने रु च प्रजापति को आपूति नाम की कन्या भेंट की। फर इनसे यज्ञ और द क्षणा नाम की सन्तान हुई। द क्षणा से बारह पुत्र हुए , जिन्हें याम कहा गया। इनमें श्रद्धा, लक्ष्मी आदि मुख्य हैं। इनसे फर यह वश्व आगे वकास को प्राप्त हुआ।

अधर्म को हिंसा के गर्भ से निर्कति उत्पन्न हुई और अन्निद्ध नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। फर इसके बाद यह वंश क्रम बढ़ता गया। कुछ समय बाद नीलरोहित , निरुप, प्रजाओं की उत्पत्ति हुई और उन्हें रुद्र

नाम से प्रतिष्ठित कया गया। रुद्र ने पहले ही बता दिया था क यह सब शतरुद्र नाम से वख्यात होंगे। यह सुनकर ब्रह्माजी प्रसन्न हुए और फर इसके बाद उन्होंने पृथ्वी पर मैथुनी सृष्टि का प्रारम्भ करके शेष प्रजा की सृष्टि बन्द कर दी।

सूतजी की बातें सुनकर ऋ ष -मुनियों ने कहा , "आपने हमें जो बताया है उससे हमें बड़ी प्रसन्नता हुई है। आप कृपा करके हमें हमारे पूजनीय देव के वषय में बताइये। जो देवता हमें पूज्य हो और उसकी कृपा से हमारे और आगे आने वाली प्रजाओं के कल्याणकारी कार्य सम्पन्न हों।" ऋ षयों की बात सुनकर सूतजी ने कहा क ऐसा देव तो केवल एक ही है और वह है महादेव और पार्वती के पुत्र श्री गणेश।

गणेश का नाम सुनते ही ऋ ष मुनि बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने सूतजी ने निवेदन कया क "आप हमें गणेशजी के वषय में पर्याप्त वस्तार से बताइये क्यों क अभी तक आपने जो कुछ भी बताया है, उससे पता चलता है क महादेव पुत्र गणेशजी के जन्म के वषय में अनेक कथाएं प्रच लत हैं।"

सूतजी अपने आसन पर बहुत ध्यानपूर्वक बैठ गए , क्षणभर उन्होंने कुछ सोचा और फर कहना प्रारम्भ कया-"गणेशजी देवों में देव श्रेष्ठ देव हैं , जो भी कार्य उनको नमन करके प्रारम्भ कया जाता है , वह सफलता प्राप्त करता है।"

सूतजी ने बताया , "जो ऋ ष-मुनि, मनुष्य, पृथ्वी का वासी 'गणेशाय नमः' का पाठ करके अपना कार्य प्रारम्भ करता है, उसे निश्चित ही अपने कार्य में सफलता मलती है।"

मुनियों ने सूतजी से कहा , "पहले तो आप कृपा करके हमें भन्न रुपों से गणेशजी के जन्मों को वृत्तांत सुनाइये वे तो महाप्रभु हैं उनके जन्म को व भन्न पुराणों में अलग -अलग रुपों से गाया गया है , और हे सूतजी ! हम सृष्टि की आदि व्यस्था के वषय में भी जानना चाहते हैं।"

सूतजी ने मुनियों की जिज्ञासा जानकर कहा , "पहले मैं आपको शव और गणेश के चरित्र वर्णन से लाभ देकर यह बताऊंगा क ब्रह्मा, वष्णु और महेश भगवान् रुद्र के अंश से रचे गए हैं।"

ऋषगण बोले, "कृपया यह बताएं क शव और गणेश का सर्वश्रेष्ठ रूप व चरित्र क्या है ? शवजी के पुत्र को कैसे प्रसन्न कया जा सकता है ? जैसा क आपने कहा-ब्रह्मा, वष्णु और महेश, भगवान रुद्र के अंश से उत्पन्न हुए। पर फर भी महेश ही पूर्णांश के रूप में माने जाते हैं।"

सूतजी ने कहा, "एक बार नारदजी ने भी ब्रह्माजी से ऐसा ही प्रश्न कया था। ब्रह्माजी ने संसार की रचना, उत्पत्ति और स्वरूप का वर्णन नारदजी से इस प्रकार कया-

''सृष्टि की प्रारम्भिक अवस्था में जब प्रलय हुई और उस वनाश काल में स्थावर -जंगम, सूर्य, ग्रह तारे सब नष्ट हो गए तो केवल एक सद्ब्रह्म ही शेष बचे थे। उस अंधकार के साम्राज्य में सद्ब्रह्म ही मन, वाणी और इन्द्रियों के ज्ञान के प्रकाश से भरे हुए थे। जो योग द्वारा ध्यानगम्य थे। वे नाम , रूप वर्ण, सत्-असत् और अन्य कर्मों से परे थे।

गणेश पुराण महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसके पठन -पाठन से सब कार्य सफल हो जाते हैं। गणेश पुराण में पांच खंड पाए जाते हैं। संक्षेप में जानते हैं गणेश पुराण के पांचों खंडों के बारे में.....

पहला खंड- आरंभ खंड -

इस खंड में ऐसी कथाएं बताई गई है जिससे हमेशा सब जगह मंगल ही होगा। इसमें सबसे पहली कथा के माध्यम से बताया है क कस प्रकार प्रजा की सृष्टि हुई और सर्वश्रेष्ठ देव भगवान् गणेश का आ वर्भाव कस प्रकार हुआ। आगे इसमें शव के अनेक रूपों का वर्णन कया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है क कैसे शव सृष्टि की उत्पत्ति,संहार और पालन करते हैं।

दूसरा खंड- परिचय खंड -

दूसरा खंड परिचय खंड है जिसमें गणेश जी के जन्म के कथाओं का परिचय दिया गया है। इसमें अलग-अलग पुराणों के अनुसार कथा कही गई है। जैसे पद्म व लंग पुराण के अनुसार। और अंत में गणेश की उत्पत्ति की कथा वस्तार बताई गई है।

तीसरा खंड- माता पार्वती खंड -

तीसरा खंड माता पार्वती खंड है। इसमें पार्वती के पर्वतराज हिमालय के घर जन्म की कथा है और शव से ववाह की कथा। फर तारकासुर के अत्याचार से लेकर कार्तिकेय के जन्म की कथा भी इसमें वर्णन है। इस खंड में व शष्ठ जी द्वारा सुनाई अरण्यराज की कथा भी है।

चौथा खंड- युद्ध खंड -

यह युद्ध खंड नामक खंड है। इसके आरंभ में मत्सर नामक असुर के जन्म की कथा है जिसने दैत्य गुरु शुक्राचार्य से शव पंचाक्षरी मंत्र की दीक्षा ली। आगे तारकासुर की कथा है। उसने ब्रह्मा की आराधना कर त्रैलोक्य का स्वा मत्व प्राप्त कया। साथ ही इसमें महोदर व महासुर के आपसी युद्ध की कथा है। इसमें लोभासुर व गजानन की कथा भी है जिसमें लोभासुर ने गजानन के मूल महत्त्व को समझा और उनके चरणों की वंदना करने लगा।

पांचवां खंड- महादेव पुण्य कथा खंड -

पांचवा खंड महादेव पुण्य कथा खंड है। इसमें सूत जी ने ऋ षयों को कहा ,आप कृपा करके गणेश,पार्वती के युगों का परिचय दीजिए। आगे इस खंड में सत्तयुग ,त्रेतायुग व द्वापर युग के बारे में बताया गया है। जन्मासुर,तारकासुर की कथा के साथ इसका अंत हुआ है। इस तरह गणेश पुराण के पांच खंडों में मंगलकारी श्री गणेश के जन्म से लेकर उनकी लीलाओं और उनकी पूजा से मलने वाले यश के बारे का संपूर्ण वर्णन कया गया है। इसके अलावा उनसे जुड़ी बहुत सी अन्य बातों को भी इसमें शा मल कया गया है।

गणेश जी को क्यों माना गया है प्रथम पूजनीय

ऋग्वेद द् वतीय मंडलके तेईसवें सूत्र के पहले मन्त्र एवं तैतिरीय संहिता में गणपति का उल्लेख आता है.उनका उल्लेख हम गणेश के रूप में पाते हैं :-

गणनां त्वां गणपति हवामहे क वं कवीनामुपं श्रवस्तम्।

अर्थात्- हे गणपति, तू वद्वानों का वद्वान है, ब्रह्म से भी ज्येष्ठ है। इस नई रचना को सुन।

वैसे अनादिकाल से ही वैदिक एवं पौरा णक मन्त्रों द्वारा गणपति की पूजा चली आ रही है। वेदों में गणपति 'ब्रह्मणस्पति' भी कहलाते हैं। ब्रह्मणस्पति के रूप में वे ही सर्वज्ञाननि ध तथा समस्त वाङ्मय के अ धष्ठाता हैं।

आदौं पूज्यों वनायकः।

यह उक्ति गणेश की अग्र पूजा का प्रबल परिचायक है।

गणपत्यर्थवशीर्षोपनिषद् के अनुसार तो गणेश को ही सर्वदेवमय व र्णत करते हुए कहा गया है क-

त्वं ब्रह्म त्वं वष्णुस्त्क्रूद्रस्त्व मंद्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यः त्वं चन्द्रमा त्वं ब्रह्म भूर्भुः स्वरोम्।

अर्थात् आप ही ब्रह्मा, वष्णु, शव, इन्द्र, अग्नि, वायु, सूर्य चन्द्र हो। आप ही स्वयं ब्रह्म, भू, भुवः स्वः एवं प्रणव हो।

गणेश शब्द की व्युत्पत्ति है-

'गणानां जीवजातानां यः ईशः स्वामी सः गणेशः (गणेशः पुं)

अर्थात, जो समस्त जीव जाति के ईश-स्वामी हैं वह गणेश हैं।

इनकी पूजा से सभी वघ्न नष्ट होते हैं-

'गणेशं पूजयेद्यस्तु वघ्नस्तस्य न जायते'। (पद्म पुराण, सृष्टि खंड 51/66)

शुक्ल यजुर्वेद के सोलहवें अध्याय के पच्चीसवें मन्त्र में भी गणपति शब्द आया है-

"नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नम इति ॥ बृहस्पतिः। यथा, ऋग्वेदे।२।२३।१।

अर्थात गणों और गणों के स्वामी श्री गणेश को नमस्कार। इस संदर्भ में हिन्दू शास्त्रों और धर्म ग्रन्थों में अनेकानेक कथाएँ प्रच लत हैं। व भन्न व भन्न स्थानों पर गणेश जी के अलग अलग रूपों का वर्णन है परन्तु सब जगह एक मत से गणेश जी की वघ्नकारी शक्ति को स्वीकार कया गया है।